भजन

तर्ज...मेरे महबूब तुझे मेरी
इश्के सरूप पिया, इश्क ही अपना जीवन

बिना पिया आपके जीवन ये जिया न जाए

रूळों की है जिंदगी ये इश्क हमे मिल जाए..

1 इश्क़मयी धाम में हम साथ इश्क में रहते थे, हो के इक रूप नजरो से पीया करते थे
इश्के दिल का लुटा के अपनी रूहों पर, रस आनंद का पल पल बढ़ाया करते थे
फिर वहीं मदभरी नजरों का सुख मिल जाए, रूहों की है जिंदगी...

2 इक सिवा तेरे किसी और को मैं क्या जानूं, तुम्हीं महबूब मेरे तुझसे ही मैं प्यार करूँ
आओ बैठे पिया आज दिल के आंगन में,करूं मीठी बात और इश्क का इजहार करूँ
सुनो मेरे वल्लभा निसबत से ये हक मिल जाए, रूहों की है जिंदगी...

3 जिस तरह मेहर से थोड़ा सा पर्दा हटाया है,उसी मेहर से पिया सेज दिल में आ जाओ
मेरी हसरत है कि अपना पिया रिझाऊं मैं,कहे दुल्हिन तुम दूल्हा हो मेरे आ जाओ
नए नए रंगों से सेज रूह की सज जाए, रूहों की है जिंदगी..

4 इश्क से सेज और सिंगार रूह के सजते हैं,बिना प्रीतम के भला कौन इसे सजायेगा
ले के उमंग अंग अंग में अंगना बैठी है,मेरा पिया आज आकर के गले लगाएगा
फिर वहीं रस भरे फूल इश्क के खिल जाए,रूहों की है जिंदगी....